में डॉ. रघुवीर, श्री देव प्रसाद घोष (बंगाल), श्री प्रेमनाथ डोगरा (जम्मू कश्मीर), श्री पीताम्बर दास (उ.प्र.), श्री ए. रामाराव (आंध्र), श्री बच्छराज व्यास (राजस्थान) तथा पं. मौलिचन्द्र शर्मा, श्री उमाशंकर त्रिवेदी आदि ने अखिल भारतीय अध्यक्ष के नाते कार्य किया। भारतीय जनसंघ की गति, प्रगति और विकास का सारा श्रेय पण्डित दीनदयाल जी के अहर्निष, अनथक परिश्रम, चिन्तन तथा योजना को ही देना होगा। उनका प्रत्येक भाषण एक नई दिशा देने वाला और कार्यकर्ताओं को अपूर्व उत्साह प्रदान करने वाला होता था। हर चुनाव में जनसंघ गतिमान होता चला गया और बहुत शीघ्र कम्युनिस्ट पार्टी को पीछे छोड़कर अखिल भारतीय राजनैतिक दल के रूप में देश की दूसरे नम्बर की पार्टी बन गया।

पं. दीनदयाल जी ने जनसंघ को केवल राजनैतिक दिशा ही नहीं दी, विश्व को एकात्मवाद का नितान्त नया और अभूतपूर्ण दर्शन भी दिया, जिसका सार तत्व है कि यदि हम मानव का चिन्तन और विकास, अध्यात्म और भौतिक सुख जैसी इकाईयों में अलग-अलग न करके यदि हम सम्पूर्ण मनुष्य का, उसकी समस्त आवश्यकताओं (शारीरिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक) का चिन्तन केवल एक इकाई के रूप में करें, तभी मानव का सही विकास सम्भव होकर विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। और मानव समाज वास्तविक सुख, समृद्धि और शान्ति की ओर अग्रसर हो सकता है। इस समय तक केवल दो ही दर्शन प्रचलित थे। पूंजीवाद और समाजबाद। मनुष्य की केवल भौतिक आवश्यकताओं का विचार करते थे और दूसरी ओर कुछ दर्शन मनुष्य के केवल आत्मिक और आध्यात्मिक विकास का चिन्तन करते थे। पण्डित जी ने दोनों को मिलाकर मनुष्य का एकात्म चिन्तन करने का नया दर्शन विश्व को दिया। और इस मंत्रदृष्टा राजर्षि के नाते हमारे सामने आये। ऐसे महान व्यक्ति को जिसने राजनीति की गन्दगी को भी शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए नैतिकता और मूल्यों पर आधारित राजनीति चलाने पर बल दिया, ऐसे महापुरूष को पाकर, कौन अभागा देश धन्य न हो उठेगा। उनके इस दर्शन के सामने प्रचलित सभी दर्शन बचकाने और बौने लगने लगे।

इसी समय पं. दीनदयाल जी ने अल्मोड़ा के विद्वान दार्शनिक-चिन्तक श्री बद्रीशाह टुल धरिया द्वारा लिखित 'दैशिक शास्त्र' नामक ग्रन्थ को खोज निकाला और उसके आधार पर चिति और विराट की कल्पना हमारे सामने उपस्थित कर राष्ट्र चिन्तन और देशभक्ति को एक नया आयाम दिय। चिति और विराट के मूल सूत्र, एकात्म मानववाद की तत्व मीमांसा, के साथ एकाकार होकर एक महान दार्शनिक के रूप में साकार हो उठे।